Sanvahak, Vol.-1; Issue-1 (July-Sept.) 2025 : PP-31-34

प्रवेशांक Online

संवाहक

साहित्य, समाज और संस्कृति की त्रैमासिक पत्रिका

Vol.-1; Issue-1 (July-Sept.) 2025

Page No.- 31-34

©2025 **Sanvahak**

https:// sanvahak.gyanvividha.com

लेखक :

दिगंत बोरा

सहायक प्राध्यापक(हिंदी)
जे.डी.एस.जी. महाविद्यालय
बोकाखात, असम

Corresponding Author :

दिगंत बोरा

सहायक प्राध्यापक(हिंदी)
जे.डी.एस.जी. महाविद्यालय
बोकाखात, असम

फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में चित्रित जाति-भेद

सारांश: फणीश्वरनाथ रेणु यथार्थवादी साहित्यकार हैं। उन्होंने अपनी कहानियों की तरह ही उपन्यासों में भी तत्कालीन जीवन को ही रूप प्रदान किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में यथार्थता लाने के लिए तत्कालीन जीवन तथा समाज का चित्रण किया है। रेणु ने अपने उपन्यासों में तत्कालीन समाज में व्याप्त जाति-भेद, ऊँच-नीच की भावना, पारिवारिक विघटन, स्त्री शोषण, स्त्री-पुरुष संबंध आदि के वर्णन से तत्कालीन भारतीय समाज का यथार्थ चित्रण किया है। रेणु ने कहानियों की तरह ही उपन्यास में ऊँच-नीच की भावना वर्णन किया है। जिससे भारतीय सामाजिक परिवेश को यथार्थ रूप मिला है। जाति-भेद भारतीय समाज व्यवस्था का एक कमजोर अंग है। समाज में जाति-भेद के आधार पर ही शोषण तथा भेद-भाव होता रहा है। जिसका सजीव वर्णन रेणु की रचनाओं में देखने को मिलता है। 'मैला आँचल', 'परती परिकथा' आदि - उपन्यासों में उन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त जाति-भेद का चित्रण किया है।

बीज शब्द : वर्ण-भेद, दलित, समाज, शोषण, ग्राम जीवन, सामजिक जीवन

प्रस्तावना: फणीश्वरनाथ रेणु हिंदी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार हैं। फणीश्वरनाथ रेणु प्रेमचंद की धारा के ही रचनाकार हैं। उन्होंने अपने उपन्यास तथा कहानी में ग्राम तथा ग्राम्य जीवन को ही रूप प्रदान किया है। रेणु बहुमूखी प्रतिभा से संपन्न साहित्यकार है। रेणु जब ग्राम्य जीवन को अपनी कथा का आधार बनाते है, तब उनकी भाषा भी उसी ग्राम जीवन से उपजती है। उनकी अभिव्यक्ति शैली ग्राम्य जीवन के यथार्थ पर आधारित है। जाति-भेद भारतीय समाज व्यवस्था का एक कमजोर अंग है। समाज में जाति-भेद के आधार पर ही शोषण तथा भेद-भाव होता रहा है। जिसका सजीव वर्णन रेणु की रचनाओं में देखने को मिलता है। "स्वतंत्रता के बाद भी भारतीय समाज निम्न, मध्य और उच्च वर्ग में बंटा हुआ है। यह वर्गीयता कहीं जाति और वर्ण के आधार पर तो कहीं आर्थिक विपन्नता के कारण है। आचार-विचारों की भिन्नता के कारण सभी वर्ग आपस में टकराते हैं। छोटी-मोटी बातों में आपस में

लड़ते हैं। उच्च वर्ग निम्न वर्ग के लोगों का विरोध और शोषण करता है।"[1]

'मैला आँचल' उपन्यास में रेणु ने जाति-भेद का वर्णन करने के साथ-साथ अशिक्षा के कारण अपने लोगों के मन में उपजती भेद-भाव की भावना का भी सजीव वर्णन हुआ है। मेरीगंज में अनेक वर्ण तथा जाति के लोग निवास करते हैं। हर वर्ण के लोग अपने आपको उच्च और दूसरी जाति के लोगों को निम्न तथा हेय सिद्ध करने में ही व्यस्त रहते हैं। राजपूत और कायस्थ दोनों जाति के लोग पुराने जमाने से ही एक दूसरे को अपना प्रतिद्वंदी मानते हुए आये हैं। ब्राह्मणों की संख्या कम होने के कारण वे किसी पर भी अपना राज नहीं चला सकते, परन्तु धर्म के नाम पर लोगों में भेद-भाव का पूर्ण रूप से प्रसार-प्रचार करता है। वह सदा तीसरी शक्ति ही रही। मेरीगंज अंचल में हाल ही में यादवों ने अपने आपको शक्तिशाली बनाया है। खेलावन यादव के नेतृत्त्व में यादवों ने अपने आपको शक्तिशाली बनाया है। जनेऊ लेने के बाद भी लोग उन्हें क्षत्रिय नहीं मानते हैं। गाँव के बाकी लोग भी इन्हीं तीनों दलों में समाहित है। हरगौरी जाति-भेद की भावना के कारण ही बालदेव को अपमानित करता है। वह बालदेव को अपमान करते हुए कहता है कि – "अरे भाई सभी काशी चले जाओगे? पत्तल चाटने के लिए भी तो कुछ लोग रह जाओ। जेल क्या गए जमाहिरलाल हो गए। कांग्रेस आफिस में भोलटियरी करते थे, अब अंधों में काना बनकर यहाँ लीडरी छाँटने आया है। स्वयंसेवक न घोड़ा का दुम।"[2] वह बालदेव को अपमानित करता है कि जेल जाने के बाद वह अपने आपको जवाहरलाल ही समझने लगा है। गाँव के भोले-भाले लोगों को ठगकर वह लीडर बने हुए है। उनकी इस तरह की कथन जाति-भेद की भावना को ही दर्शाता है।

जाति-भेद की भावना के कारण ही गाँववाले आपस में एक साथ बैठकर खाना खाने के लिए भी तैयार नहीं होते हैं। महंथ साहब के भंडारे में ब्राह्मणों ने गाँव के अन्य लोगों के साथ बैठकर खाना खाने से इनकार करते हैं। वे बालदेव को हिदायत देते हैं कि केवल ब्राह्मणों के लिए अलग से भंडारे का प्रबंध किया जाय। जिसमें केवल ब्राह्मण ही होंगे। अन्य जाति के लोगों के साथ खाना खाने के लिए देने से वे भंडारे में खाना स्वीकार नहीं करेंगे। इसी भेद-भाव की भावना के कारण ही कायस्थ तथा राजपूत के बच्चे दूसरे टोली के बच्चे को खाना बन रही जगह से भगा रहा होता है, ताकि वे लोग खाने में हाथ न लगा दे। यह जाति भेद की व्यापकता को ही दर्शाता है। छोटे-छोटे बच्चों में भी भेद-भाव की भावना घर कर गयी है। "बाभनों ने तो साफ इनकार कर दिया। यदि बाभनों के लिए अलग से प्रबंध न हुआ तो सरब संघटन में नहीं खायेंगे..............हम लोग अलग बनवा लेंगे।"[3]

भारतीय समाज व्यवस्था में हर पग पर लोगों से जाति के बारे में ही पूछा जाता है। कर्म से अधिक जाति को महत्व दिया जाता है। इसी कारण 'मैला आँचल' उपन्यास के प्रमुख पात्र डाक्टर प्रशांत को हर पग पर जाति शब्द का सामना करना पड़ता है। लोग हर बात में प्रशांत की जाति जानना चाहते थे। मेरीगंज गाँव के लोग डाक्टर प्रशांत की जाति के बारे में जानने के लिए इच्छुक होते हैं। सभी लोग उसकी जाति के बारे में पूछता रहता है। वह पहले अपनी जाति डाक्टर कहकर बात को टाल दिया करता था। परन्तु ग्रामीण इलाके में अपनी जाति डाक्टर कहकर काम नहीं चलाया जा सकता है। यहाँ तक कि गाँव के लोग डाक्टर के लिए खाना बनानेवाला लड़का प्यारु की भी जाति जानना चाहते हैं। गाँव के लोग नाम पूछने के बाद ही जाति के बारे में जानना चाहता है। जिसका वर्णन रेणु ने इस प्रकार किया है – "डाक्टर प्रशांत कुमार ! जात ? नाम पूछने के बाद ही लोग यहाँ पूछते हैं – जात ? जीवन में बहुत कम लोगों ने प्रशांत से जाति के बारे में पूछा है। लेकिन यहाँ तो हर आदमी जाति पूछता है। ..... जाति बहुत बड़ी चीज है। जात-पात नहीं माननेवालों की भी जाति होती है। सिर्फ हिन्दू कहने से ही पिंड नहीं छुट सकता। ब्राह्मण हैं ? कौन ब्राह्मण ! गोत्र क्या है ? मूल कौन है?.. शहर में कोई किसी से जात नहीं पूछता। शहर के लोगों की जाति का क्या ठिकाना ! लेकिन गाँव में तो बिना जाति के आपका पानी नहीं चल सकता।"[4]

जाति-भेद की भावना को समाज में अशिक्षा ही बढ़ावा दे रही है। इसी अशिक्षा के कारण महंगूदास की बेटी फुलिया पेटमान से शादी करने के बाद अपने घर तथा माँ के हाथ का बना हुआ नहीं खाती है। यहाँ तक कि वह अपने मायके में आकर घर के भीतर नहीं जाती है। आँगन में ही रहती है और स्वयं पकाकर खाती है। क्योंकि वह सोचती है कि शादी हो जाने के बाद वह निम्न जाति की नहीं रही और वह अपने आपको क्षत्रिय मानने लगी

थी। अपने आपको उच्च जाति की मानकर माँ के हाथ का नहीं खाती है। अशिक्षा के कारण ही जाति को महत्वपूर्ण मानते हुए अपनी माँ तथा परिवार के लोगों से दूर हो जाती है। यह समाज का भयानक यथार्थ है। भेद-भाव के नाम पर फुलिया अपनी माँ से दूर हो जाती है। "फुलिया अब जात समाज से नहीं डरती। वह तंत्रिमा छत्री नहीं, वह असल बुन्देला छत्री की स्त्री है। आँगन में अपने से पकाकर खाती है। .... माँ का छुआ भी नहीं खाती है।"[5]

रेणु ने 'परती परिकथा' उपन्यास में भी जाति-भेद का चित्रण किया है। जाति-भेद की भावना के कारण ही मलारी और सुवंश के विवाह को गाँववाले तथा घर के लोग स्वीकार नहीं करते हैं। बाद में भागकर दोनों रजिस्ट्री विवाह करने बाद जब गाँव आते हैं तो मलारी को तो घर के लोग अपना लेते हैं। परंतु सुवंश को घरवाले बाहर से वापस भेज देते हैं। "मलारी और सुवंश आये। सुवंशलाल अपनी माँ से मिलने गया था। मुंह लटकाकर लौटा है।"[6]

परानपुर के लोगों में भेद-भाव की भावना ने इस तरह घर कर लिया था कि लोग देवताओं के भी जाति निर्धारण करने लगे। किसी देवताओं को उच्च जाति के मानते थे तो किसी को निम्न जाति के देवता मानते थे। "गहलौटा, केयट, खवास और गंगोलाटोली के लोग परती के परमदेव को पूजते हैं। साल में एक बार पूजा दी जाती है। घर-घर से लोग पान-सुपारी, कबूतर और बत्तक लेकर पहुँचते हैं। .... सवर्णटोले के लोग इस देव को नहीं मानते। वे कहते है – परमा तो छोटी जातिवालों का देवता है!"[7] जब मलारी बीमार पड़ती है। गाँव के लोग संदेह करते हैं कि मलारी पर किसी देवी की सवारी तो नहीं हुई है। गाँव के लोग प्रश्न करते हैं कि – " 'ऐ, ऐ! देखो क्या हुआ उसको ? क्या उस पर भी सवारी हुई ? कौन देव ?.... देव नहीं, देवी। देवी परमेसरी।'.... 'लेकिन देवी परमेसरी रैदास की बेटी पर कैसे सवार हुई?"[8] परानपुर के लोगों के ये प्रश्न तत्कालीन समाज में व्याप्त जाति-भेद को ही दर्शाता है। लोगों में भेद-भाव की भावना ने इस तरह घर कर लिया है कि वे देवी-देवताओं के भी जाति निर्धारण करने लगे।

परानपुर गाँव के दलित लोगों को सवर्ण लोग हर तरह शोषण करता है। गाँव में आयोजित नाटक के लिए चंदे का धान खेत में ही काट लेते थे। परन्तु जब अभिनय की बात आती है, तो उनलोगों को केवल जो आज्ञा वाला पार्ट ही दिया जाता है। राजा-महाराजा, नायक-खलनायक सभी पार्ट सवर्ण टोले के लोग करते थे। "गाँव में दलित वर्ग को हर तरह से मर्दित करके रखा गया था, अब तक! नाटक मंडली के लिए प्रत्येक वर्ष खलिहान पर ही चंदे का धान काट लेते थे, बाबू लोग। लेकिन कभी भी द्वारपाल, सैनिक अथवा दूत का पार्ट छोड़कर अच्छा पार्ट, माने हीरो का पार्ट नहीं दिया सवर्ण टोली के लोगों ने।........और नाटक में राजा, राजा का बेटा, पुरोहित, मंत्री आदि जितने भी अच्छे पार्ट होते हैं, ऊँची जातिवालों को दिया जाता है।"[9]

मलारी गाँव के स्कूल की शिक्षिका है। परन्तु गाँव के उच्च वर्ग के लोग मलारी को केवल मास्टरनी या शिक्षिका कहकर संबोधित नहीं करते हैं। वे मलारी को चमाइन मास्टरनीजी कहकर संबोधित करते हैं। सुवंश की अष्टवर्षीय भतीजी शान्ति मलारी को चमारिन मास्टरनी कहती है। सुवंश शान्ति को समझाता है कि चमारिन मास्टरनी नहीं कहना चाहिए है। परन्तु शान्ति की माँ इस बात का विरोध करती है। जिसका वर्णन रेणु ने इस प्रकार किया है – "मँझली बहू की अष्टवर्षीया बेटी शान्ति भी उठकर आयी और हंसकर बोली –'हाँ, हाँ। इसी में चमाइन मास्टरनीजी का फोटो है। स्कूल में ....!' सुवंश ने अप्रसन्न होकर कहा – ' बेटी, चमाइन मास्टरनीजी मत कहो।' 'तो क्या कहेगी?'- मँझली बहू मुँह बनाकर बोली –'अकबार में फोटू छापी हो गया तो वह जात में भी बड़ी हो जायेगी क्या? इस चमारिन ने चार अक्षर पढ़ क्या लिया है, आकाश में छेड़ .....'।"[10]

जाति-भेद के नाम पर शोषण केवल उच्च और निम्न वर्ग के मध्य ही नहीं है। एक जाति के भीतर और अनेक उपजातियाँ हैं। उन सभी उपजातियों में भी भेद-भाव देखने को मिलता है। जिसका वर्णन उपन्यासकार रेणु ने गरुड़धुज झा के वर्णन द्वारा किया है। गरुड़धुज झा की जाति को ब्राह्मण जाति के लोग हरिजन से भी

गया-गुजरा समझते हैं। उसके हाथ का छुआ हुआ नहीं खाते। जिसका वर्णन इस प्रकार हुआ है – "गरुड़धुज झा महापात्र है – महाब्राह्मण। ब्राह्मण लोग उसके हाथ का छुआ हुआ नहीं खाते।.....हाँ हुजूर, डोम से भी गया गुजरा समझते हैं लोग हमारी जाति को। कंटाहा ब्राह्मण।"[11]

उपन्यासकार रेणु ने अपने उपन्यास 'परती परिकथा' में जितेंद्र द्वारा जाति-भेद की दीवार को तोड़ने के लिए नाट्य मंच का निर्माण करता है। जहाँ गाँव के सभी लोग जाति-भेद की दीवार को तोड़कर एकत्रित रूप में नाट्य मंचन करते हैं। इस प्रकार कथाकार रेणु ने सांस्कृतिक एकता के द्वारा लोगों में एकता लाने की बात कही है।

निष्कर्ष: उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु ने अपने साहित्य में तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण करने के लिए भारतीय समाज की विविध परिस्थितियों का चित्रण किया हैं। उन्होंने तत्कालीन समाज का सजीव वर्णन करने के लिए सांस्कृतिक रीति-रिवाज, परंपरा से लेकर समाज की कुरीतियों का भी वर्णन किया है। जिस कारण से जाति-भेद की भावना भी उनकी रचनाओं में देखने को मिलती है। उन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय समाज का कमजोर अंग जाति-भेद का वर्णन किया है। उनके उपन्यास 'मैला आँचल', 'परती परिकथा', 'कितने चौराहे', आदि जाति के नाम पर होनेवाले शोषण, अत्याचार का सजीव और यथार्थ वर्णन मिलता है। 'परती परिकथा' में जितेन्द्र द्वारा गुलाब का बाग़ लगाकर प्रतीकात्मक रूप से समाज में व्याप्त छुआछूत को दूर कर एकता स्थापित करने का ही प्रयास है। नाट्य मंडली की स्थापना से गाँव के सभी लोगों को एकत्रित करता है। ताकि वे आपसी भेद-भाव भुलाकर एक साथ एकता तथा शान्ति से रह सके।

सन्दर्भ सूची :

1.फणीश्वरनाथ रेणु का उपन्यास साहित्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, राजीव आर. डांगर, पृ- 209

2.रेणु रचनावली – 2, भारत यायावर(सं.), राजकमल प्रकाशन - नयी दिल्ली, चौथी आवृत्ति – 2012, पृ – 33

3. वही, पृ – 40

4. वही, पृ – 60

5. वही, पृ – 174

6. वही, पृ – 642

7. वही, पृ – 381

8. रेणु रचनावली – 2, भारत यायावर(सं.), राजकमल प्रकाशन - नयी दिल्ली, चौथी आवृत्ति – 2012, पृ – 385

9. वही, पृ – 509

10. वही, पृ – 396

11. वही, पृ – 403

•